© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 03 | July - September 2021

छायावादी कविताओ की आधुनिक विकास यात्रा पर एक अध्ययन

शोधार्थी : पिंकी

शोध निर्देशक : डॉ. ममता सिंह, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी – विभाग

कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडेरमा, झारखंड

सार

आधुनिक युग में मनुष्य का जीवन और सामाजिक संबंध जटिल होते जा रहे हैं। इसलिए आधुनिकता का अभिप्राय गलत अथवा सही कार्य से नहीं है, वह तो एक प्रक्रिया है जो दोनों रूपों में होती है। आधुनिकता मनुष्य को अतीत से अलग कर वर्तमान में रह कर प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है। आधुनिकता को पश्चिमीकरण अथवा नगरीकरण समझना तर्कसंगत नहीं है। आधुनिकता परंपरा की विरोधी नहीं अपितु उससे आधार लेकर विकसित होने वाली प्रगतिशील विचारधारा है। विसंगति से अभिप्राय – जीवन की वह स्थिति जहाँ प्रत्येक धारणा का उल्टा रूप दिखाई देता है। विसंगति को देखा जाए तो वह मानव मस्तिष्क की दुर्बलताओं की उपज है। जीवन में व्यक्ति को संघर्षों का सामना करते हुए जीना पड़ता है यही उसकी सबसे बड़ी विरोधाभास की स्थिति है की न तो वह अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक प्रकार से कर पा रहा है और न ही दायित्वों से स्वयं को अलग कर पाया। उसकी त्रिशंकु के समान स्थिति ने उसे हास्यास्पद बना दिया। यह मानव जीवन की विडंबना ही है कि न तो आज वह अपने परिवेश से अलग हो सकता है और न साथ रह सकता है। मानव जीवन की इसी विरोधाभासी स्थित के कारण विसंगतियों का पादुर्भाव हुआ। आज व्यक्ति अपने परिवेश में स्वयं को असहाय व फालतू समझने लगा है तथा वह अपने अस्तित्व की रक्षा करने में लगा हुआ है। स्वदेशी परिवेश को आधुनिक जीवन की विसंगतियों ने प्रभावित किया है। धार्मिक अंधविश्वासी भावनाओं ने मनुष्य को अज्ञानता के गहरे कूप में धकेला, सामाजिक विषमताओं, आर्थिक समस्याओं तथा पारिवारिक कलह के कारण व्यक्ति का जीवन विसंगत हो गया।

प्रमुख शब्दः– दायित्व, असहाय और धार्मिक।

प्रस्तावना

हिंदी की स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा की विकसित अवस्था को छायावाद नाम से अभिहित किया गया है। इस आधार पर देखा जाए तो श्रीधर पाठक, मुकुटधर पाण्डेय और रामनरेश त्रिपाठी, जिन्हें आचार्य शुक्ल 'सच्चे स्वच्छन्दतावादी' कहते थे, प्रथम चरण के कवि है और दूसरे चरण इस काव्य–प्रवृति को अधिक सूक्ष्म और व्यापक रूप देकर प्रौढ़तम उत्कर्ष तक पहुँचाने वाले कवि जयशंकर प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी वर्मा

थे, जिन्हें छायावादी कवि माना गया। 'छायावाद' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मुकुटधर पाण्डेय ने किया। उन्होंने 1920 में जबलपुर से प्रकाशित पत्रिका "श्रीशारदा" में "हिंदी कविता में छायावाद" नाम से एक लेखमाला प्रकाशित की। उन्होंने छायावाद की आरंभिक विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए लिखा कि "छायावाद एक मायामय सूक्ष्म वस्तु है। इसमें शब्द और अर्थ का सामंजस्य बहुत कम रहता है।" किन्तु आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह अनुमान लगा लिया कि छायावाद और रहस्यवाद बंगाल के ब्रह्म–समाजी छायापदों और रवीन्द्रनाथ टैगोर की रह्स्यानुभूतियों का रूपांतरण है और जिसका आधार ईसाई धर्म–प्रचारकों का रहस्य–दर्शन अर्थात् फैंटसमाटा है। कुछ समय के बाद छायावाद के लिए "रोमैंटिसिज्म" शब्द का प्रयोग किया गया। कवि और आलोचकों ने छायावाद और रोमैंटिसिज्म को पर्याय समझना शुरू किया। आचार्य शुक्ल ने छायावाद को एक शैली मात्र घोषित कर दिया। किन्तु रहस्यवाद, छायावाद और स्वच्छन्दतावाद (रोमैंटिसिज्म) में सूक्ष्म अंतर है। लेकिन आचार्य शुक्ल के इस मत को उनके प्रिय कवि सुमित्रानंदन पन्त ने यह कहकर अमान्य कर दिया कि रहस्योन्मुखता छायावाद की एक महत्वपूर्ण विशेषता अवश्य है, उसका केंद्रीय भाव नहीं है। छायावाद वस्तुतः एक विशेष सौन्दर्य दृष्टि का उन्मेष है। रहस्योन्मुखता और प्रकृति प्रेम उसी की अभिव्यक्ति की विविध सरणियाँ है। जहाँ तक छायावाद को एक शैली मात्र मानने की बात है तो प्रतीकात्मकता को छायावाद का अनिवार्य लक्षण पहले ही मान लिया गया है।

छायावाद काव्य की मुख्य विशेषताएँ

छायावादी काव्य की विशेषताओं को निम्न रूप से विभाजित किया जा सकता है–

व्यक्तिवाद की प्रधानता– द्विवेदी युग की कविता वस्तुगत थी लेकिन छायावादी, कविता वस्तुगत न होकर आत्मगत या रागात्मक थी। वैयक्तिकता के फलस्वरूप छायावादी काव्य में स्वच्छन्दतावाद की उद्भावना हुई। इस युग में व्यक्तिगत सुख–दुःख की अभिव्यक्ति जोरों से हुई, समाज के दुःख में वह अपने दुःख की कल्पना करने लगे। इस प्रकार इस युग में व्यक्तिवादी विचारधारा को बल मिला।

प्रकृति–चित्रण– छायावादी कवियों का प्रकृति चित्रण रीति युग में सर्वथा भिन्न है। इन कवियों ने प्रकृति के आलम्बन रूप का चित्रण किया। रीतिकालीन ऐन्द्रियता के स्थान पर सात्त्विकता को स्थान मिला। छायावादी कवियों का मन प्रकृति में सराबोर है। उन्होंने प्रकृति में सूक्ष्मता का समावेश किया। प्रकृति का नारी रूप में चित्रण तथा प्रकृति पर चेतना का आरोप (मानवीकरण) किया है।

सौन्दर्य भावना– नारी सौन्दर्य के चित्रण में छायावादी कवियों की उद्भावनाएँ सर्वथा मौलिक हैं। उन्होंने स्थूलता और अश्लीलता के स्थान पर सूक्ष्मता और सात्विकता स्वीकार की।

राष्ट्र–प्रेम– छायावादी काव्य राष्ट्रीय जागरण में पल्लवित हो रहा था फलतः स्वदेश प्रेम की भावना का बढ़ना निश्चित था। वह युग की पुकार के साथ चलता रहा।

रहस्यवादी भावना– छायावाद के युग का कवि अन्तर्मुखी था, बहिर्मुखी प्रवृत्ति की अपेक्षा अन्तर्मुखी प्रवृत्ति की ओर झुकाव ही रहस्यवाद का प्रतीक है लेकिन इन कवियों में कबीर एवं जायसी सी गहराई नहीं थी। इस दृ ष्टि से महादेवी जी का गीत "तुझे मुझ में प्रिय फिर परिचय क्या" रहस्यवाद का उत्कृष्ट उदाहरण हो सकता है।

साहित्य की समीक्षा

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

इनको छायावादी काव्य का कटु आलोचक कहा जाता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन्होंने अपनी समझ से इसकी खूबियों का भी वर्णन बड़े औदार्य के साथ किया है तो इसकी कमजोरियों पर भी व्यंग्य बाण चलाने से नहीं चूके हैं। भाषा के संदर्भ में छायावाद और निराला के बारे में ये लिखते हैं––

"...अंग्रेजी काव्यों से परिचित कवि सीधे अंग्रेजी से ही तरह–तरह के लाक्षणिक प्रयोग लेकर उनके ज्यों–के–त्यों अनुवाद जगह–जगह अपनी रचनाओं में लाने लगे। 'कनक प्रभात', 'विचारों में बच्चों की साँस', 'स्वर्ण–समय', 'प्रथम मधुकाल', 'तारिकाओं की तान', 'स्वपनिल कांति', ऐसे प्रयोग अजायबघर के जानवरों की तरह उनकी रचनाओं में इधर–उधर मिलने लगे।

ये आगे लिखते हैं –– "निराला जी की शैली कुछ अलग रही। उसमें लाक्षणिक वैचित्र्य का उतना आग्रह नहीं पाया जाता जितना पदावली की तड़क–भड़क और पूरे वाक्य के वैलक्षण्य का।"

शुक्ल जी इन चीजों को भाषा का 'प्रयोग–वैचित्र्य' बताते हैं।

शुक्ल जी ने निराला की काव्य भाषा के दो तत्वों पर संक्षेप में ही लेकिन अच्छा विचार किया है। इनके शब्द प्रयोग के बारे में वे लिखते हैं कि 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी "कविताओं में भाषा बोलचाल की पाई जाती है। लेकिन निराला जी की भाषा अधिकतर संस्कृत की समस्त शब्दावली से जुड़ी हुई होती है जिसका नमूना 'राम की शक्तिपूजा' में मिलता है। जैसा कि पहले कह चुके हैं, इनकी भाषा में व्यवस्था की कमी प्रायः पाई जाती है जिससे अर्थ या भाव व्यक्त करने में वह कहीं–कहीं बहुत ढीली पड़ जाती है।"

नंददुलारे वाजपेयी के विचार

अपनी पुस्तक 'कवि निराला' में श्री नंददुलारे बाजपेयी ने निराला की काव्यभाषा पर एक पूरा अध्याय ही रखा है। बाजपेयी जी निराला के मित्रों में से थे और उनके कवि व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व को इन्होंने खूब निकट से देखा–परखा है।

काव्य भाषा परिचय

काव्य भाषा की सामान्य विशेषताएँ बताते हुये ये लिखते हैं––"काव्यभाषा सामान्य भाषा से अधिक व्यापक, व्यंजक, चमत्कारपूर्ण और परिष्कृत होती है। वह सदा विषय और भाव का अनुसरण करती है। विषय यदि महान् और असाधारण है तो उसे व्यक्त करने के लिये भाषा भी वैसी ही उदात्त और असाधारण होगी।"

आधुनिक अवधारणा

बाजपेई जी आगे लिखते हैं––"काव्यभाषा के संबंध में एक आधुनिक धारणा यह है कि प्रत्येक शब्द अपने आप में एक भावनात्मक इकाई का प्रतिनिधि होता है। अतएव काव्य दृष्टि में केवल समीचीन शब्दों का आकलन ही एकमात्र उद्देश्य रहा करता है।"

नराला की काव्य–भाषा

निराला की काव्यभाषा के संबंध में विशेष रूप से विचार करते हुये बाजपेई जी कहते हैं कि "निराला ऐसे समय में हिन्दी काव्य रचना में प्रवृत्त हुये जब खड़ी बोली का काव्य अपने शैशव काल में था। हिन्दी काव्य की भावात्मक क्षमताएँ तब तक विकसित नहीं हुई थीं। इस प्रकार छायावादी काव्य और विशेषकर निराला का काव्य भाषा की दृष्टि से नये प्रयोगों, नए विस्तार और नवोन्मेष का प्रतिनिधि है।

अतः निराला की काव्यभाषा को विकास की इसी भूमिका पर देखना पड़ेगा। "छायावाद युग के अन्य प्रमुख कवियों की तुलना में निराला की काव्य भाषा अनेक भिन्नताएँ प्रकट करती है।

छायावाद : एक परिचय

"छायावाद का आरंभ सामान्यतः 1920 ई. के आसपास से माना जाता है। तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं से पता चलता है कि 1920 तक 'छायावाद' संज्ञा का प्रचलन हो चुका था।" मुकुटधर पांडेय को इस नामकरण का श्रेय दिया जाता है।

"स्वानुभूति, कल्पना, प्रकृति का मानवीकरण, आध्यात्मिक छाया, मूर्तिमत्ता, लाक्षणिक विचित्रता आदि छायावाद की विशेषताएँ कही जाती है।"

"वस्तुतः ये सभी विशेषताएँ कमो–बेश कहीं–न–कहीं अन्यत्र भी मिल जाती हैं, लेकिन एकत्र ही छायावाद के अतिरिक्त किसी एक युग में इतनी प्रचुरता के साथ नहीं मिलती।" 'सरस्वती' पत्रिका के जून, 1921 के अंक में श्री सुशील कुमार का निबंध प्रकाशित हुआ था––'हिन्दी में छायावाद'। इसमें छायावादी कविता को

टैगोर–स्कूल की चित्रकला की तरह 'अस्पष्ट' कहा गया है। इसके अलावा श्री कुमार ने छायावादी कविता को 'कोरे कागज की भाँति अस्पष्ट', 'निर्मल ब्रह्म की विशद छाया', 'वाणी की नीरवता', 'निस्तब्धता का उच्छ्वास', एवं 'अनंत का विलास' कहा है।

आगे लिखते हैं —— "छायावाद का केवल पहला अर्थात् मूल अर्थ लेकर हिन्दी काव्यक्षेत्र में चलनेवाली श्री महादेवी वर्मा ही हैं। पंत, प्रसाद, निराला इत्यादि और सब कवि प्रतीक पद्धति या चित्रभाषा शैली की दृष्टि से ही छायावादी कहलाए।" वैसे, रहस्यवाद के भीतर आनेवाली रचनाएँ तो थोड़ी या बहुत सभी ने की हैं। शुक्ल जी के मतानुसार छायावादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—— शब्दों से खेलने की कला, प्रणयोद्गारों की अभिव्यक्ति, वेदना का वर्णन, सौन्दर्य के प्रति आकर्षण, मधुर क्रियाकलापों की चर्चा, और अतृप्ति की व्यंजना।

इसके अलावा जीवन के अवसाद, विषाद और नैराश्य की झलक भी उनके गीतों में मिलती है। लाक्षणिक पदावलियों का प्रयोग भी छायावादी कविता में मिलता है जो श्रुतिसुखद और नादमय होती हैं।

छायावाद के प्रमुख कवि

पंत, प्रसाद, महादेवी और निराला को छायावाद के चार प्रमुख स्तंभ माना जाता है। इनकी काव्य कला और प्रमुख रचनाओं का परिचय इस प्रकार है——

सुमित्रानंदन पंत

इनके कवि जीवन की शुरुआत 1918 ई. से मानी जाती है। 'वीणा' इनका पहला काव्य संकलन है जिसमें 'हृतंत्री के तार' नामक चर्चित कविता संगृहीत है।

इनकी रहस्यभावना को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'स्वाभाविक' कहा है अर्थात् यह हृदय की सहज जिज्ञासा और मस्तिष्क की ऊहा से उपजी हुई है। पंत जी की कविताओं में प्रकृति के सुन्दर रूपों की अभिव्यक्ति पाई जाती है। 'ग्रंथि' इनका दूसरा महत्वपूर्ण संकलन है जिसमें असफल प्रेम की कथा गाई गयी है।

जयशंकर प्रसाद

ये छायावादियों में सबसे वरिष्ठ थे और सबसे पहले इनका देहावसान भी हो गया। ये पहले ब्रजभाषा में कविता करते थे। इनके द्वारा रचित खड़ीबोली की प्रारंभिक रचनाएँ हैं—— कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, करुणालय और प्रेमपथिक। झरना (1918) इनकी छोटी–छोटी कविताओं का संग्रह है जिसका परिबर्द्धित संस्करण 1927 में निकला। आँसू (1931) इनका महत्वपूर्ण संकलन है।

महादेवी वर्मा

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 03 | July - September 2021

इनके बारे में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि "छायावादी कहे जानेवाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिये वेदना ही इनके हृदय का भावकेन्द्र है।" वे आगे लिखते हैं कि "गीत लिखने में जैसी सफलता महादेवी जी को हुई वैसी और किसी को नहीं। इसीलिये इनके ऐसे सुविचारित शीर्षक इन्होंने रखे हैं जो कालानुक्रमिक हैं। '

प्रगतिशील जीवन मूल्य

प्रगतिशील साहित्यिक मूल्य प्रगतिशील जीवन मूल्यों की ही सृजनात्मक अभिव्यक्ति हैं। अतः दूसरे को समझने के लिये पहले को समझना अत्यावश्यक है। कुछ लोग 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' या 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की मानवतावादी भावना को प्रगतिशील मानते हैं। लेकिन इस विशेष संदर्भ में इसका विशेष तात्पर्य है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में यह इस प्रकार है–

"प्रगतिवादी साहित्य मार्क्स के प्रचारित तत्वदर्शन पर आधारित है। इस विचारधारा के अनुसार–

1. संसार का स्वरूप भौतिक है, वह किसी चेतन सर्व समर्थ सत्ता का विवर्त या परिणाम नहीं है।
2. उसकी प्रत्येक अवस्था की व्याख्या की जा सकती है। कुछ भी अज्ञेय या अचिन्त्य नहीं है, कुछ भी रहस्य या उलझनदार नहीं है। इस मत को माननेवाला साहित्य रहस्यवाद में विश्वास नहीं कर सकता।
3. इस मत में समाज निरंतर विकसनशील संस्था है। आर्थिक विधानों के परिवर्तन के साथ–साथ समाज में भी परिवर्तन होता है। इस मत को स्वीकार करने वाला साहित्य समाज की रूढ़ियों को सनातन से आया हुआ, शासक या ईश्वर की निभ्रांत आज्ञाओं पर बना हुआ और उच्च–नीच मर्यादा को सनातन विधान नहीं मान सकता।"

इस प्रकार प्रगतिवादी साहित्यक समाज की किसी व्यवस्था को सनातन नहीं मानता, किसी भी वस्तु को रहस्य या अज्ञेय नहीं समझता तथा किसी अज्ञेय–अलक्ष्य चिरंतन प्रियतम की लीला को साहित्य का लक्ष्य नहीं मानता वह समाज को बदल देने में विश्वास करता है।

उपसंहार

आधुनिक जीवन की विसंगतियों को हम भली–भांति तभी समझ पाएंगे जब हम आधुनिकता अथवा आधुनिक जीवन का गहन विश्लेषण करेंगे। आज के इस युग में आधुनिकता या आधुनिक जीवन से अभिप्राय उन भौतिक सुखों से लिया जाता है जिनका हम उपभोग करते हैं। अधिकांशतः देखा गया है कि आधुनिकता को विचारों में कम, बाहरी चमक–दमक में अधिक महत्व दिया गया है। आधुनिक प्रतिमानों को अपनाने के लिए जिस शक्ति, आत्मबल, दृढ़ता, संकल्प और निरंतर श्रम की आवश्यकता है, वह सब आज की मानव पीढ़ी स्वयं

में संचित अथवा संगृहीत नहीं कर पायी है। संभवतः इसी कारण यह पीढ़ी स्वयं को आधुनिक परिवेश में बेबस और अकेला पाती है। अनेक प्रकार की समस्याएँ और तनाव पैदा होते जा रहे हैं। अनेक कुंठाएँ, चिंताएँ और संत्रास जैसी विसंगतियाँ आदमी को अपने में समाहित कर रही हैं। वर्तमान समय में विघटन की प्रवृत्ति को प्रश्रय मिल रहा है। राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी क्षेत्रों में विसंगतियाँ पनपी हैं। 'तनाव' ने जहाँ अनेक बीमारियों को जन्म दिया है वहीं अपराधों की भी संख्या बढ़ाने में योगदान दिया है। विश्वास जैसे मूल्यों का ह्रास हुआ जो विसंगति की ही देन है। स्वदेशी परिवेश को विदेशी परिवेश से आयातित आधुनिक जीवन की विसंगतियों ने प्रभावित किया है।

आधुनिकता अथवा आधुनिक जीवन : 'आधुनिकता' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'अधुना' शब्द से हुई है। आधुनिक विशेष कालावधि का वाचक है, विशेषण तथा संस्कृत शब्द है। आधुनिक – आजकल का, वर्तमान काल का, नया जमाने का। "आधुनिकीकरण का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द – 'मॉडर्नाइजेशन' है। यह शब्द अंग्रेजी के ही शब्द 'मॉडर्न' से बना है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'मोडो' से हुई है। लैटिन भाषा में मोडो' शब्द का अर्थ है – 'प्रचलन'। अर्थात जो कुछ प्रचलन में है वही आधुनिक है।"

संदर्भ

- ज्ञानोदय (रवींद्र कालिया – कोजी कॉर्नर (एक विसंगति) : जुलाई 1965 – पृष्ठ –103
- कमलेश्वरः नई कहानी की भूमिका– पृष्ठ– 15
- कृष्ण बिहारी मिश्रः आधुनिक सामाजिक आंदोलन और आधुनिक हिन्दी साहित्य– पृष्ठ – 130
- (श्री गोपाल शरण सिंह 'दहेज की कुप्रथा से हानियाँ' शीर्षक)
- डॉ. दंगल झाल्टेः नए उपन्यासों में नए प्रयोग : नए उपन्यास नयी प्रणालियाँ–पृष्ठ– 5
- नई कविता ओर अज्ञेय––हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी––डॉ० नन्द दुलारे वाजपेयी, पु० 248
- साहित्य का परिवेश, अज्ञेय, पृ० 03
- तार–सप्तक, सं० अज्ञेय, पु०
- दूसरा तार–सप्तक, सं० अज्ञेय, पृ० 6
- तार–सप्तक, सं० अज्ञेय, पृ० 7
- तार–सप्तक (द्वितीय संस्करण) सं० अज्ञेय, पृ० 275–279
- दस्तावेज, सं० विश्वनाथप्रसाद तिवारी, पृ० 5
- अज्ञेय ओर आधुनिक रचना की समस्या, डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ० 7

- बज्ञेय : एक अध्ययन, डॉ० भोलाभाई पटेल, पृ० 89
- आत्मनेपद, अज्ञेय, पु० 28
- ऋण स्वीकारी हुं——लिखी कागद कोरे, अज्ञेय, पृ० 6–,7
- आत्मनेपद, अज्ञेय, पृ० 22